उपसंहार

उपसंहार

``मोहन राकेश के नाटकों में चित्रित प्रेम भावना का अनुशीलन`` विषय का अध्ययन करने के पश्चात निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड यहाँ प्रसतुत है -

मोहन राकेश : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व

मोहन राकेश के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का अध्ययन करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि राकेश का व्यक्तित्त्व आकर्षक था। उनके व्यक्तित्त्व को समझना बहुत ही मुश्किल था। राकेश के घर की आर्थिक स्थिति नाजुक थी। अत: वे बचपन से ही अर्थ की समस्या का मुकाबला करते हुए दिखाई देते हैं। राकेश ने अपने जीवन में अनेक नौकरियाँ की मगर वे कहीं भी एक जगह टिके नहीं। जहाँ भी स्वाभिमान दुखाया गया वहाँ से वे तुरंत चले गए। वे कभी भविष्य की चिंता नहीं करते थे, कि आगे क्या होगा ? उनके साथ आर्थिक स्थिति ने तो सावन की धूप-छाया की तरह खेल खेला है। कभी राकेश स्वयं परिस्थिति के सामने मजबूर होकर नौकरी करते हैं तो कभी उतने ही स्वाभिमान के साथ उसे छोड़ भी देते हैं। राकेश घर की तलाश में कई दिनों तक भटकते रहे। अंत में उन्हें जो घर चाहिए वह अनीता जी ने दिया। अपने जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने आर्थिक स्थिति पर विजय पा ली थी। ईमानदार, स्पष्टवादी, स्वाभिमानी, अच्छे मित्र, अहं तथा मानव सुलभ भावना से युक्त आदि राकेश के व्यक्तित्त्व की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। अपने जीवन की समस्याओं से जूझते-जूझते उनकी जीवन ज्योत असमय ही प्रकृति में समा गई। राकेश को साहित्यिक बनाने में उनके माता-पिता तथा उनकी दीदी (कमला) का महत्त्वपूर्ण योगदान था। राकेश ने साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन किया है। अत: वे कठिनाइयों से गुजरे हुए बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार सिद्ध होते हैं।

मोहन राकेश के नाटक : विषयगत विवेचन

प्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश के सभी नाटकों का विवेचन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि उनके सभी नाटक प्रेम से संबंधित है। उनके सभी के सभी नाटक सामाजिक हैं और वास्तववादी भी। मोहन राकेश के पहले वाले दो नाटकों में ऐतिहासिक पात्र जरूर लिए गए हैं। उनके नाम भी ऐतिहासिक है। फिर भी आधुनिकता के संदर्भ को उजागर करते हैं। बचे हुए दो नाटकों के पात्र आम आदमी की तरह हैं। मोहन राकेश के नाटकों के नायक-नायिका परिस्थिति से जूझते हुए नजर आते हैं विशेष करके आर्थिक स्थिति और वर्तमान से। वर्तमान का यथार्थ चित्रण राकेश ने अपने नाटकों में किया है। राकेश ने अपने नाटकों को कल्पना जगत से उठाकर सीधे यथार्थ की धरती पर लाया जिसमें उनको काफी सफलता मिली । उन्होंने प्रेम भावना में त्रिकोण की समस्या को उजागर किया है। राकेश के सभी नाटकों का अध्ययन करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि उनके नाटकों का मूल स्वर प्रेम भावना है। अपने नाटकों के माध्यम से राकेश ने प्रेम भावना की अलग- अलग स्थितियों को खोल दिया है। बदलते संदर्भ में प्रेम का रूप भी बदलता जा रहा है। उनके नाटकों के पात्रों में भी यही प्रवृत्ति दृष्टिगोचर होती है। प्रेम के अभाव के कारण कुछ पात्रों का जीवन भी उजड़ गया है। प्रेम में उत्पन्न दरार या बाधाओं को भी राकेश ने अपने नाटकों में चित्रित किया है। निष्कर्ष यह कि राकेश पौराणिक संदर्भ के जरिए भी आधुनिक जीवन को परिभाषित करते हैं और आधुनिक विषय को लेकर वर्तमान जीवन को प्रकट करते हैं। प्रेम भावना उनके नाटकों में आधारभूत है। फिर भी चाहे वह प्रेम टूटा हुआ हो, असफल हो या वासना-जन्य हो, राकेश के नाटकों में यह सर्वत्र विद्यमान है।

प्रेम संकल्पना : स्वरूप और सिद्धांत

प्रेम का व्युत्पत्तिपरक अर्थ है -प्रसन्न करना, आनंद देना। प्रेम के कोशगत अर्थ अनेक मिलते

हैं। वस्तुत: प्रेम को पूर्णत: परिभाषा में बाँधा नहीं जा सकता। क्योंकि वह इतना छोटा और सीमित नहीं है। वह तो असीम अनादि अनंत है। अत: उसे परिभाषा में बाँधना मुश्किल है। प्रेम को परिभाषा में बाँधना अर्थात इस भावना की व्यापकता को सीमित दायरे में बाँधने के समान है। प्रेम के स्वरूपगत अध्ययन और विवेचन के पश्चात हम इस निष्कर्ष तक पहुँचते हैं कि प्रेम का स्वरूप निश्चित रूप से बताना मुश्किल है। लोग उसका अनुभव करते हैं मगर कह नहीं सकते।

उपर्युक्त अध्ययन विवेचन के आधार पर प्रेम के सिद्धांत इस प्रकार हैं - प्रेम में त्याग महत्त्वपूर्ण होता है। उस में समर्पण की भावना होती है। इस में विश्वास महत्त्वपूर्ण होता है। प्रेम में प्रतिदान की कामना नहीं होता। प्रेम कोई भी और किसीसे भी हो सकता है। प्रेम जितना मजबूत होता है उतना ही नाजुक भी होता है। प्रेम में एक-दूसरों की भावना का आदर किया जाता है। प्रेम में द्वैत की स्थिति नहीं होती। प्रेम अंधा होता है। उसका मार्ग कठिन होता है। प्रेम अमृत भी है और जहर भी है। इस प्रकार प्रेम के मुख्य सिद्धांत हो सकते हैं। ये सिद्धांत प्रेम में बहुत ही महत्त्वपूर्ण साबित होते हैं।

विवेच्य नाटकों में चित्रित प्रेम भावना

मोहन राकेश ने अपने नाटकों में मानवीय प्रेम के विविध रूपों का चित्रण किया है। प्रेमभावना की नाजुक डोर को पकडकर मनुष्य जीवन का वास्तविक और सजीव चित्रण राकेश के नाटकों में प्रस्तुत है। उनके नाटकों में प्राप्त प्रेम भावना के विविध रूपों में प्रेमी-प्रमिका का प्रेम, मानवीय प्रेम, विवाहपूर्व प्रेम, दांपत्य प्रेम, मित्र प्रेम, असफल प्रेम, नौकर-मालिक का प्रेम, माता-पिता का प्रेम, माँ-बेटी का प्रेम, राजा-प्रजा का प्रेम, ईश्वरीय प्रेम, विवाहेतर प्रेम, माँ-बेटे के बीच में हीन रिश्ता, बाप-बेटे का प्रेम, मामा-भाँजे का प्रेम, बाप का बेटी से प्रेम, भाई-बहन का प्रेम, बाहर से सफल किंतु भीतर से असफल प्रेम, नौकरी पेशा महिला और उसके बॉस का प्रेम आदि का चित्रण परिलक्षित होता है।

मोहन राकेश ने अपने सभी नाटकों में प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम, मानवीय प्रेम, विवाहपूर्व प्रेम, दांपत्य प्रेम, मित्र प्रेम और अधिकतर असफल प्रेम का खुलकर चित्रण किया है। नौकर-मालिक का प्रेम `आधे अधूरे` को छोड़कर शेष सभी नाटकों में प्राप्त होता है। माता-पिता का प्रेम और माँ-बेटी का प्रेम `लहरों के राजहंस` नाटक को छोड़कर सभी नाटकों में दिखाई देता है। राजा-प्रजा का प्रेम पहले दो नाटकों में केवल उपरी तौर पर दिखाई देता है। ईश्वरीय प्रेम पहले और अंतिम नाटक में केवल एक झलक के रूप में प्रस्तुत है। विवाहेतर प्रेम अंतिम दो नाटकों में प्रभावी ढंग से दिखाई देता है। माँ-बेटे के बीच प्रेमहीन-रिश्ता और बाप-बेटे का प्रेम अंतिम दो नाटकों में यत्र-तत्र दिखाई देता है। मामा-भाँजे का प्रेम `आषाढ का एक दिन` में चित्रित है। बाप का बेटी से प्रेम, भाई-बहन का प्रेम, बाहर से सफल किंतु भीतर से असफल प्रेम और नौकरी पेशा महिला और उसके बॉस का प्रेम आदि `आधे अधूरे` में चित्रित है। लेकिन प्रेम के इन विविध रूपों में राकेश ने अपने नाटकों में प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम, मानवीय प्रेम, मित्र प्रेम, विवाहपूर्व प्रेम, एवं विवाहेतर प्रेम, पति-पत्नी का प्रेम, असफल प्रेम, और नौकरी पेशा महिला और उसके बॉस का प्रेम प्रभावी ढंग से चित्रित किया है। राकेश ने पहले दो नाटकों में प्रेम का भावना के स्तर पर चित्रण हुआ है और अंतिम दो नाटकों में प्रेम का वासना के रूप में चित्रण हुआ है।

राकेश के नाटकों का अध्ययन एवं विश्लेषण करने के पश्चात यह स्पष्ट हो जाता है कि उनके सभी नाटकों में मुख्य रूप से असफल प्रेम का चित्रण प्रस्तुत है। उनके नाटकों के नायक-नायिका या अन्य पात्र किसी -न-किसी कारण से अपने प्रेम में असफल रहे हैं। चाहे फिर वह शादी के पहले हो या बाद में, कालिदास हो या राजानंद, राकेश के नाटकों के नायक हो या नायिका, प्रेमी हो या प्रेमिका, पति हो या पत्नी - सभी अपने असफल प्रेम से पीडित हैं। यही आज की समाज की वास्तविकता भी है। प्रेम में अधिकतर असफलता का ही चित्रण प्रस्तुत है। शायद इसी कारण राकेश के नाटक दु:खान्त दृष्टिगोचर होते हैं।

विवेच्य नाटकों में प्रेम-समस्याएँ -

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक साहित्य को एक नई दिशा प्रदान करने में मोहन राकेश का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। एक सफल नाटककार के रूप में उन्हें सफलता प्राप्त हो गई है। राकेश ने अपने नाटकों में मध्यवर्गीय जीवन-चित्रण के जरिए अपने युग के प्रेम की समस्याओं को प्रधानता दी है। उनके नाटकों में मध्यवर्गीय जीवन में आनेवाली प्रेम समस्याओं का चित्रण प्रभावी ढंग से किया है। राकेश के नाटकों में आदमी की जिंदगी, बनते-बिगडते रिश्ते, पति-पत्नी का संघर्ष, प्यार-नफरत आर्थिक अभाव तथा पति -पत्नी के बीच स्थित प्रेम की समस्या आदि का चित्रण दिखाई देता है। राकेश ने प्रेम में आनेवाली विविध समस्याओं का चित्रण अपने नाटकों में किया है। वर्तमान जीवन में प्रेम समस्याओं से घिरा हुआ है। राकेश के नाटकों में प्रधान रूप से विवाहपूर्व और विवाहोत्तर जीवन में आनेवाली प्रेम-समस्याएँ दिखाई देती हैं, जैसे- अर्थ की समस्या, तीसरे व्यक्ति का आगमन, समझौते की भावना का अभाव, स्वच्छंदता, अहं, विवाहेतर संबंध, व्यक्ति की दुर्दमनीय इच्छा, स्वभावगत भिन्नता, पौरूषत्त्व का अधिकार, संस्कारहीनता, असंतुष्टता और निठल्लापन आदि।

उपर्युक्त सभी समस्याओं से अर्थ की समस्या, तीसरे व्यक्ति का आगमन, समझौते की भावना का अभाव और स्वच्छंदता ये चारों समस्याएँ राकेश के सभी नाटकों में दिखाई देती है। अहं की समस्या `लहरों के राजहंस` और `आधे अधूरे` में मिलती है। विवाहेतर संबंध और पौरुषत्त्व का अधिकार ये दो समस्याएँ `आधे अधूरे` और `पैर तले की जमीन` में देखने को मिलती है। निष्कर्ष के रूप में सब से मुख्य बात यह है कि उपर्युक्त सभी समस्याएँ राकेश के `आधे अधूरे` नाटक में दिखाई देती है। राकेश ने इन समस्याओं का हल कहीं भी नहीं दिया है। इसे उन्होंने पाठकों पर छोड़ दिया है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर मैं इस निष्कर्ष तक पहुँचा हूँ कि राकेश ने अपने सभी नाटकों में प्रेम में बाधा उत्पन्न करनेवाली विविध

समस्याओं का चित्रण किया है।

उपलब्धियाँ :-

1. मोहन राकेश के नाटकों में मुख्यत: असफल प्रेम का चित्रण उपलब्ध है। राकेश के नाटकों का अध्ययन करनेवाला कोई भी संवेदनशील पाठक प्रेम में उपस्थित होनेवाली समस्याओं का हल करने के सारे उपाय पा सकता है। राकेश के नाटकों की यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
2. राकेश के नाटकों में प्रतिबिम्बित प्रेम की जो विविध समस्याएँ है वे प्राय: वर्तमान कालीन प्रेम की ही समस्याएँ है।
3. राकेश के नाटकों में मानव जीवन में बनते-बिगड़ते रिश्तों का जो चित्रण है वह आज सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है।
4. राकेश के नाटकों में चित्रित प्रेम मुख्यत: मानवीय प्रेम है ईश्वरीय नहीं।
5. राकेश के नाटकों में प्रेमभंग अथवा प्रेम के असफल होने के कारणों को सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है।

अध्ययन की नई दिशाएँ -

राकेश के साहित्य को लेकर निम्नांकित विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है -

1. ``राकेश के कथा साहित्य में चित्रित प्रेम भावना का अनुशीलन``
2. ``राकेश के समग्र साहित्य में प्रस्तुत प्रेम भावना का अनुशीलन``

उपर्युक्त विषय मुझे अपने लघु शोध प्रबंध के लेखन के दौरान दृष्टिगोचर हुए हैं। यहाँ मेरे अपने विषय की सीमा है। भविष्य में उपर्युक्त विषयों पर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य को शोधकर्ता संपन्न

कर सकते हैं। आनेवाले शोधार्थी यह कार्य संपन्न करें और वह शोधार्थी शायद मुझे ही बनना पडें।